स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय नांदेड के B.A. S.Y. हिंदी को S.L. द्वितीय भाषा पुस्तक 'गद्यतरंग' संकलन मे साहित्यकी दस गद्य विधाओं की दस रचनाओं को संकलित किया गया है पहला गद्य रचना स्वामी विवेकानंद द्वारा लिखित रचना है 'युवाओं से'

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 ई.स. मे कलकत्ता मे हुआ था। इनके बचपन का नाम नरेंद्र था। इनके पिता पेशे से वकिल थे। शिक्षा प्राप्त करने के बाद इनके मन में अध्यात्म एवं दर्शन की उदात्त चे प्रखर हो गयी स्वामी रामकृष्ण को इन्होंने अपना गुरू बनाया। इन्होंने भारतीय द[र्शन] ज्ञान तथा जिवन मुल्यों को सम्पूर्ण विश्व मे प्रचारित प्रसारित किया स्वामीजीके वि[चारों] में मानविय विकास तथा समता का संदेश निहित है। इन्होंने कर्म योग, प्रेमयोग, भ[क्ति] कृष्ण और भगवतगीता, हिंदु धर्म के पक्ष मे आत्मतत्व शिर्षक से अनेक पुस्तके लिखिं अपने अनेक सम्भाषणों मे स्वामी जीने अपने विचारो को व्यक्त किय[ा]

'युवाओं से' इस पाठ मे विवेकानंद जीने विशेष रूप मे भारतीय युवाओ [को] सम्बोधन किया है। देश के उत्थान के लिए युवकों मे से ही कार्यकर्ताओ का चयन करना चाँहिए ऐसा उनका कहना है। उनका विश्वास है भारतवर्ष का उत्[थान] शारिरिक शक्ति से नही बल्की आत्मा की शक्ति से होगा। नवीन भारत सभी [न]स्थानो तथा क्षेत्रों से उदित होगा। यदि भारत नहीं रहेगा तो सदाचारपूर्ण जीव[न] का ही संसार से विनाश हो जायगा। त्याग और 'सेवा भारत देश के आदर्श [है] मरते दम तक गरीबो तथा पददलितों के लिए सहानुभूति रखनी चाहिए। निडर होकर उनके विकास के लिए कार्य करना चाहिए। मनुष्य को सबसे पहले मनुष्य बनने का प्रयत्न करना चाहिए। सुधार की अपेक्षा स्वाभाविक उन्नति अधिक महत्वपूर्ण है। बुद्धी और विचारशक्ति से बडी शक्ति हृदय की महाशक्ति है। प्रेम हृदय से ही उत्पन्न होता है। नास्तिक वह नहि है जो ईश्वर को नही मानता है। नास्तिक वह है जो स्वयं को नही मानता। नवयुवकों को शक्तिशाली बनना चाँहिए। ज्ञान का आत्मसात करते हुए देश सेवा के लिए संघटन बनना चाहिए नेतागीरी के लिए नहीं।

स्वामीजी कहते हैं मेरी आशा के केंद्र मे वह युवक है जो तेजस्वी और विर्यवान है उनको संघटित करके समस्या का समाधान करुंगा। हे वीरयुवको प्रतिज्ञा करो अपना जिवन भारतमाँके संतानोके लिए ही समर्पित करोगे, तुम दुर्बल नही हो, दुय्यम बातोंको नकारो ऐसा नियम किर्ती मनुष्य के पास तभी आती है जब वह मनुष्य बनता है इसलिए हे वीरो उठो, जागृतहो जाओ जनसाधारण की दुर्दशा का प्रतिकार करो तबतक न रूको जबतक अपना लक्ष प्राप्त न करो ऐसा संदेश स्वामी विवेकानंदजी ने अपने रचना गद्य पाठ युवाओ से इस संबोधन मे महान विचार प्रस्तुत किये है